अध्याय - पाँच

बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव

बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव के जनम पूर्वी चंपारण के गोविन्दगंज थाना के नगदाहाँ गाँव में सन् 1906 ई० में भइल रहे। इहाँ के शिक्षा गाँव आ मोतिहारी में भइल। जीविका खातिर इहाँ के शुरू में शिक्षक बननी आ फेर पत्रकारिता कइलीं।

बलदेव बाबू हास्य-व्यंग्य के कवि रहीं। इहाँ के गाँव-गवंई से प्रतीक-बिम्ब उठवले बानी. जवन पाठक के मरम के बेधता। इहाँ के कविता 'सुनीं-सुनाई कथा आज चम्पारण के गाँव के' उद्‌बोधन गीत खानी लोकप्रिय भइल। इहाँ के प्रकाशित किताब बाड़ी सन - 'चंपारण के गीत', 'वतन का तराना', 'वृक्ष रक्षा सम्मेलन', 'चंद्रिका पाण्डेय व्यक्ति और व्यक्तित्व।'

इहाँ के मउवत 26 अगस्त सन् 1985 ई० के हो गइल।

विषय प्रवेश

प्रस्तुत कविता में दलित जीवन के दु:ख भरल कथा कहल गइल बा। सामाजिक व्यवस्था के न्यायपूर्ण बनावे खातिर ई जरूरी बा कि जातिगत भेदभाव खतम कइल जाव। ई कविता दलित वर्ग के प्रति होखे वाला भेदभाव के ओरवावे के प्रेरणा देता। दलित वर्ग के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से लिखल गइल ई कविता बतावता कि उच्च कोटि के कलाकार वर्ग के जाति के नाँव पर सतावल ठीक नइखे।

हिनुए नू बानी

'गँवई का बाहर बगइचा का पास में
एकनी के घर ना खोभार बाटे बाँस में
जिनगी भर जनलस ना कुँआ के पानी
तेहू पर कहेला हिनुए नू बानी
सुअर के साथी ई सूअरो से बदतर
कुकुरो ना करिहें स एकनी के परतर
नीमन से धोअल ई कपड़ा ना जाने
बाते सफाई के मन में ना आने।
बाबू का बेटी का सादी का बेरा
भोरे से दुअरा लगवले से ई डेरा
धइलस ई दउरा में पत्तल बिटोर के
कउआ आ कुकुर से छीन के आ छोर के
अठवरन ई जूठे पर कइलस गुजारा
कफन के कपड़ा बा एकर सहारा
मालूम ना एकनी का कइसे सहाला
गरमी के गरमी आ जाड़ा के पाला
जुग-जुग के मारल सतावल धरम के
रोएला भकुहा ई अपना करम के
एकेगो मड़ई में परिवार भर के
सूतेला एके में गोड़-मुड़ कर के
कबहीं ना घर ई बनवले स फरके
गँवई के ई होखे चाहे शहर के
पीएला गड़हा ओ गुड़ही के पानी
मइले अँगवछा में सतुआ ई सानी

दोसरा के मइला ई फेंकेला पागल
मड़ई में एकरा गलीजे बा लागल
कहियो ना अभिमान जीवन में जागल
कहियो ना मनसा से भय-भूत भागल
बाबू के दुआरा बहारेला रोजो
नइखे मन में कि अपना के खोजो
कहिया ले सुतबे, खड़ा तनि हो जो
गइल पन्थ आगे दउर तेहूँ जो जो।
डगरा में रच दी कमल-फूल पत्ती
बारी ना घर में कबो तेल-बत्ती
सिंघा बजा के जगत के जगवलस
भय-भूत भारत का मन से भगवलस।
अपना के अइसे ई कइसे बनवलस
दुनिया बदल ई कदम ना बढ़वलस
मुँह एकर कता से कादो चिरल बा
उलटा विधाता बा कइसन फिरल बा
होके कलाकार बेबस घिरल बा
गड़हा गरीबी में गत्र से गिरल बा
मड़ई में एकरा अमावस रहेला
आन्हर अन्हेरा के कइसे सहेला।
कवन ह, कहाँ बा, कहाँ ले ई जाई?
बुद्ध, बहादुर के, के ई बुझाई?
जनबे ना कइलस पढ़ाई-लिखाई
के शंख फूँकी आ कहिया जगाई?
रे छोड़ रउरो कहइहें स कहिया,
कहिया कहइहें स बाबू ओ भइया।

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'हिनुए नू बानी' कवना विधा के रचना ह ?
2. 'हिनुए नू बानी' शीर्षक कविता के रचनाकार के ह ?
3. "जुग-जुग के मारल सतावल धरम के' - एह पंक्ति में कवि 'सतावल धरम के' के माध्यम से का कहे के चाहता ?
   (क) दलित लोग के साथे धरम में भेदभाव कइल बा।
   (ख) दलित लोग के साथे धरम में भेदभाव नइखे कइल गइल।
   (ग) दलित लोग के स्थिति के धरम से कवनो संबंध नइखे।
   (घ) कुछो ना।
4. 'सिंघा बजा के जगत के जगवलस' - एह पंक्ति के अर्थ बा -
   (क) सुतला से जगवला के (ख) गीत गावल
   (ग) दुनिया के सजग आ सचेत कइल (घ) कवनो ना
5. बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव कहाँ के रहे वाला रहीं ?
   (क) सासाराम (ख) सीवान (ग) आरा (घ) चंपारण
6. 'जिनगी भर जनलस ना कुँआ के पानी, तेहू पर कहेला हिनुए नू बानी' - एह पंक्तियन के माध्यम से कवि कहे के चाहता -
   (क) हिन्दू धर्म के भेदभाव का बादो दलित हिन्दूए धर्म मानतारे
   (ख) दलित अपना के हिन्दू नइखन मानत
   (ग) दलित कुँआ के पानी ना पियले रहे
   (घ) कवनो ना

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'होके कलाकार बेबस घिरल बा' - एह पंक्ति के आधार पर महत्वपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के निरर्थकता पर प्रकाश डालीं।
2. गरीब आदमी अपना परिवार का संगे केंगन रहेला ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'पठित कविता में दलित वर्ग के प्रति सहानुभूति के स्वर मुखर भइल बा।' – एह कथन के समीक्षा करीं।
2. 'हिनुए नू बानी' कविता के अभिधात्मकता एकर प्राण तत्व बा।' – एह कथन के स्पष्ट करीं।
3. ई कविता पढ़ला के बाद कवना तरह के भाव मन में जागता आउर कवना रस के संचार होता ?

शब्द भंडार

खोभार – सूअर के रहेवाल सकेत गन्दा घर
अठवरन – आठो पहर, हरदम
भकुआ – जेकरा कुछ ना बुझाय
सिंघा – एगो बाजा, जे बिआह आदि शुभ काम में मुँह से फूकल जाला
कत्ता – एगो लोहा के हथियार जे से बांस, लकड़ी काटल जाला
गलीजें – सड़ल गलल महकत गंदगी
डगरा – बांस के बनल एगो गोलाकार चीज जे से अनाज फटकारल, डगरावल जाला
गच – एकाएक गिरला के एगो आवाज
परतर – बराबरी
भकुहा – भकुआइल रहेवाला, बुरबक

2. एक शब्द दीं –

(जइसे–जहवाँ बहुते आम के गाछ होखे – अमवारी)
जहवाँ ढेर बाँस एके संगे होए –
जहवाँ तरे-तरे के फूल के पौधा होखे –

3. कविता पढ़ के सात गो संज्ञा पद चुनीं। जइसे –

बाँस, बगइचा, पानी, सूअर, कपड़ा, मड़ई, अँगवछा
सतुआ, डगरा, सिंघा, गरीबी, गड़हा, अन्हेरा

रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. हिन्दी कवि पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी के कविता 'भिक्षुक' आ 'तोड़ती पत्थर' के संकलन करीं आ 'दलित' शीर्षक कविता से तुलनात्मक अध्ययन करीं।
2. कविता में वर्णित दलित-जीवन आ आज के समय में एह जातियन के जीवन स्तर में का सुधार आइल बा - तुलनात्मक वर्णन करीं।

परियोजना कार्य

1. **अपना गाँव-टोला में घूम फिर के ध्यान से देखीं आ बतलाईं -**
   (क) का सभ लोग आपुस में सहयोग करत बा ?
   (ख) का सभे जातियन के सामाजिक आ माली हालत नीमन बा ?
   (ग) छुआछूत आ भेदभाव अबहियों पहिले खानी बा ?